HINDUSTAN (30.08.2016)

मात्र पांच सौ रुपये की लागत से एक ऐसा नया इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस बनाया है, जिससे नेत्रहीनों को हाथ में छड़ी लेकर चलने से छुटकारा मिल जाएगा

छात्रों ने तैयार की दिव्यांगों के लिए नई इलेक्ट्रॉनिक बेल्ट

इनसे सीखें

फरीदाबाद | वरिष्ठ संवाददाता

वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के छात्रों ने एक बार फिर कमाल किया है। मात्र पांच सौ रुपये की लागत से छात्रों ने एक ऐसा नया इलेक्ट्रोनिक डिवाइस बनाया है, जिससे नेत्रहीन दिव्यांग को हाथ में छड़ी लेकर चलने से छुटकारा मिल जाएगा। इस डिवाइस को छात्रों ने पेंट पर पहने जाने वाली बेल्ट के बक्कल के रूप में तैयार किया है। इसमें लगे सेंसर दिव्यांग को कान में बताएगा कि आगे रास्ते में गड्ढ़ा है या सीढ़ी।

वाईएमसीए के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग विभाग के छात्र करन हांडा, मयंक, मोक्ष, कुशांक व कौशल ने नेत्रहीन दिव्यांगों को रोजमर्रा में आने वाली दिक्कत को दूर करने का सपना देखा और इस पर काम शुरू किया। पूरी टीम ने अपनी एकग्रता और अनुसंधान से सेंसर ने सफलता पाई और फिर यह डिवाइस तैयार हुई। जिससे शरीर के निचले हिस्से में कहीं लगाना था। इसके लिए पेंट की बेल्ट बेहतर लगी। फिर इस डिवाइस को बेल्ट के बक्कल में लगाने का निर्णय किया गया।

कुलपति डॉ दिनेश कुमार और छात्र नेत्रहीनों के लिए बनाई डिवाइस के साथ ● हिन्दुस्तान

छात्रों को मिला नकद 15 हजार का पुरस्कार

दिल्ली के इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान के तकनीकी वार्षिकोत्सव एस्या-16 में भाग लेने के लिए एक थीम आधारित उपकरण तैयार करना था। छात्रों ने इसे ही तैयार कर इस उत्सव के हेकाथलॉन कार्यक्रम में प्रस्तुत किया। छात्रों ने अपने इस अनुसंधान को बेहतरीन प्रस्तुतिकरण दिया। उन्हें 15 हजार का पुरस्कार भी मिला।

डिवाइस में थ्री डी प्रिंटर तकनीक का उपयोग

टीम प्रमुख करन हांडा ने बताया कि इसमें 3डी प्रिंटर तकनीक का उपयोग करते हुए इसका स्ट्रक्चर डिजाइन किया। फिर माइक्रो कंट्रोलर और सेंसर का प्रयोग करते हुए बेल्ट पर लगने वाला एक ऐसा बक्कल तैयार किया। जिसे इयरफोन या हेडफोन से साथ जोड़ दिया गया। इसे लगाने के बाद दिव्यांग को डिवाइस में लगे सेंसर की मदद से रास्ते में आने वाली बाधाओं की सूचना उसके कान में आवाज से मिल जाएगी। सूचना देने के लिए सेंसर की क्षमता को दूरी के हिसाब से बढ़ाया जा घटाया भी जा सकता है।

हमने छात्रों के अनुसंधान को आम व्यक्ति से जोड़ने का प्रयास किया है। छात्र जो अनुसंधान कर रहे हैं उनका सीधा और जल्द लाभ आम व्यक्ति को मिल जाए। छात्रों ने एक बेहद सस्ता उपकरण दिव्यांगों के लिए तैयार किया है। मैं व्यक्तिगत रूप से इस संबंध केंद्रीय समाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री से बता करुंगा।

प्रोफेसर डॉ. दिनेश कुमार, कुलपति

DAINIK JAGRAN (30.08.2016)

दृष्टिहीनों को छड़ी से मिलेगा छुटकारा

- वाईएमसीए के पांच छात्रों ने बनाया सेंसरयुक्त बेल्ट बक्कल
- आइपी यूनिवर्सिटी के तकनीकी उत्सव में मिला दूसरा स्थान

जागरण संवाददाता, फरीदाबाद: वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों की टीम ने एक ऐसा उपकरण बनाया है, जिससे दृष्टिहीन लोगों को अब छड़ी की जरूरत नहीं पड़ेगी। उन्हें बेल्ट के बक्कल से ही रास्ते में आने वाली बाधाओं की जानकारी मिल जाएगी। करन हांडा, मयंक, मोक्ष, कुशांत और कौशल की टीम को इस उपकरण के लिए इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान नई दिल्ली के वार्षिक तकनीकी उत्सव 'एस्या-16' में दूसरा स्थान मिला है। इस टीम को 15 हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया है।

ऐसे काम करेगा बक्कल

प्रोजेक्ट के बारे में करन हांडा ने बताया कि सबसे पहले अपनी सोच को मूर्त रूप देने के लिए उनकी टीम ने 3डी प्रिंटर तकनीक का उपयोग करते हुए स्ट्रक्चर डिजाइन किया और फिर माइक्रो कंट्रोलर और सेंसर का प्रयोग करते हुए बेल्ट पर लगने वाला एक ऐसा बक्कल बनाया, जिससे इयरफोन या हेडफोन को अटैच किया जा सकता है। इसे लगाने के बाद दृष्टिहीन व्यक्ति को डिवाइस में लगे सेंसर की मदद से रास्ते में आने वाली बाधाओं की सूचना पहले ही मिल जाएगी। जैसे रास्ते में कहीं सीढ़ी है या गड्ढा है तो करीब दो फुट की दूरी पर ही दृष्टिहीन को डिवाइस में लगा सेंसर बोलकर सूचित कर देगा कि आगे गड्ढा है। विद्यार्थियों ने दावा किया कि सूचना देने के लिए सेंसर की क्षमता को दूरी के हिसाब से बढ़ाया जा घटाया भी जा सकता है। कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से जुड़े विद्यार्थियों के लिए व्यवहारिक ज्ञान बेहद जरूरी है। तकनीकी प्रतिस्पर्धा व उत्सव विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच को सही दिशा देने के लिए बेहतरीन मंच साबित होते है। विद्यार्थियों को ऐसे अवसरों का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में भी अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे है। उन्होंने विद्यार्थियों को आश्वासन दिया कि उनकी नवीन सोच को बढ़ावा देने में विश्वविद्यालय पूरा सहयोग देगा। संकायाध्यक्ष विद्यार्थी कल्याण प्रो. एस के अग्रवाल ने भी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी।

वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी की टीम पुरस्कार के रूप में मिले 15 हजार रुपये का चेक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश कुमार से लेते हुए। जागरण

AMAR UJALA (30.08.2016)

वाईएमसीए के छात्रों ने दिव्यांगों के लिए तैयार किया सेंसर डिवाइस

छड़ी से मिलेगी निजात, चलना-फिरना होगा आसान

अमर उजाला ब्यूरो

फरीदाबाद। दिव्यांग अब बिना छड़ी पकड़े भी चल फिर सकेंगे। बेल्ट के बक्कल के रूप में तैयार किए गए डिवाइस को आसानी से पहनकर चल फिर सकते हैं। फरीदाबाद के वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग के छात्रों ने इसे तैयार किया है।

बेल्ट पर लगाए जाने वाले बक्कल से इयरफोन या हेडफोन को अटैच किया जा सकता है। इसे लगाने के बाद दिव्यांग व्यक्ति को डिवाइस में लगे सेंसर की मदद से रास्ते में आने वाली परेशानी की सूचना मिल जाएगी। करीब दो फुट की दूरी पर डिवाइस में लगे सेंसर सूचना देंगे कि आगे गड्ढा है।

छात्रों का दावा है कि सूचना देने के लिए सेंसर की क्षमता को दूरी के हिसाब से बढ़ाया घटाया जा सकता है।

टीम के करन ने बताया कि डिवाइस को बनाने में उनकी टीम को करीब 16 घंटे लगे और इस पर महज पांच सौ रुपये की लागत आई। टीम स्टैक प्वाइंटर का हिस्सा रहे करन हांडा, मयंक, मोक्ष, कुशांक तथा कौशल ने दिव्यांगों की परेशानी को ध्यान में रखकर डिवाइस बनाने का निर्णय लिया।

बेल्ट के बक्कल के रूप में तैयार किया गया है डिवाइस।

प्रोजेक्ट को मिला दूसरा स्थान

इस प्रोजेक्ट को इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान नई दिल्ली के वार्षिक तकनीकी उत्सव में दूसरा स्थान मिला है। छात्रों को 15 हजार रुपये की नकद पुरस्कार राशि भी मिली है। भाग लेने वाले छात्रों को थीम पर आधारित उपकरण बनाना था जिस पर छात्रों ने यह डिवाइस तैयार किया।

PUNJAB KESARI (30.08.2016)

नेत्रहीनों को मिलेगा छड़ी से छुटकारा

फरीदाबाद, (नवीन धमीजा, ब्यूरो चीफ): वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय फरीदाबाद के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों ने नेत्रहीनों के लिए एक ऐसी डिवाइस बनाई है, जिसकी मदद से नेत्रहीन व्यक्ति को सहारे के लिए छड़ी पकड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस डिवाइस को उन्होंने बेल्ट के बक्कल के रूप में बनाया है, जिसे आसानी से पहना जा सकता है। दरअसल, इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान नई दिल्ली के वार्षिक तकनीकी उत्सव एस्या-16 में हिस्सा लेने गये इन विद्यार्थियों को एक थीम पर आधारित उपकरण बनाना था। उत्सव के हेकाथलॉन इवेंट में वाईएमसीए विश्वविद्यालय की टीम स्टैक प्वॉइंटर का हिस्सा रहे करन हांडा, मयंक, मोक्ष, कुशांक तथा कौशल ने नेत्रहीनों को रोजमर्रा में आने वाली दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी डिवाइस को बनाने का निर्णय लिया, जिससे नेत्रहीनों को हमेशा छड़ी पकड़कर चलने की मजबूरी से छुटकारा मिल जाये।

प्रोजेक्ट की विस्तार से जानकारी देते हुए करन हांडा ने बताया कि सबसे पहले अपनी सोच को मूर्त रूप देने के लिए उनकी टीम ने 3डी प्रिंटर तकनीक का उपयोग करते हुए स्ट्रक्चर डिजाइन किया और फिर माइक्रो कंट्रोलर और सेंसर का प्रयोग करते हुए बेल्ट पर लगने वाला एक ऐसा बक्कल बनाया, जिससे इयरफोन या हेडफोन को अटैच किया जा सकता है। इसे लगाने के बाद नेत्रहीन व्यक्ति को डिवाइस में लगे सेंसर की मदद से रास्ते में आने वाली बाधाओं की सूचना पहले ही मिल जायेगी। जैसे कि यदि रास्ते में कहीं सीढ़ी है या गड्ढा है तो करीब दो फुट की दूरी पर नेत्रहीन को डिवाइस में लगे सेंसर बोलकर सूचना देंगे कि आगे गड्ढा है। विद्यार्थियों ने दावा

किया कि सूचना देने के लिए सेंसर की क्षमता को दूरी के हिसाब से बढ़ाया जा घटाया भी जा सकता है तथा डिवाइस को और बेहतर बनाया जा सकता है।

करन ने बताया कि डिवाइस को बनाने में उनकी टीम को करीब 16 घंटे लगे और इस पर महज 500 रुपये की लागत आई। इस प्रोजेक्ट को इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान नई दिल्ली के वार्षिक तकनीकी उत्सव में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है, जिसके तहत विद्यार्थियों ने 15 हजार रुपये की नकद पुरस्कार राशि भी जीती।

कुलपति प्रो0 दिनेश कुमार ने विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से जुड़े विद्यार्थियों के लिए व्यवहारिक ज्ञान बेहद जरूरी है। तकनीकी प्रतिस्पर्धाएं तथा उत्सव विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच को सही दिशा देने के लिए बेहतरीन मंच साबित होते हैं और विद्यार्थियों को ऐसे अवसरों का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में भी अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को आश्वासन दिया कि उनकी नवीन सोच को बढ़ावा देने में विश्वविद्यालय पूरा सहयोग देगा। संकायाध्यक्ष विद्यार्थी कल्याण प्रो0 एस0 के0 अग्रवाल ने भी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी है।

LOCAL NEWSPAPER – HADOTI ADHIKAR (30.08.2016)

सोमवार को वाईएमसीए विश्वविद्यालय के कुलपति दिनेश कुमार प्रोजेक्ट बनाने वाली टीम के सदस्यों के साथ।

नेत्रहीनों को छड़ी से छुटकारा दिलायेगा बेल्ट का बक्कल

विद्यार्थियों के प्रोजेक्ट को तकनीकी उत्सव में मिला 15 हजार का नकद पुरस्कार

फरीदाबाद, 29 अगस्त (अ.स.)। वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों ने नेत्रहीनों के लिए एक ऐसी डिवाइस बनाई है, जिसकी मदद से नेत्रहीन व्यक्ति को सहारे के लिए छड़ी पकड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस डिवाइस को उन्होंने बेल्ट के बक्कल के रूप में बनाया है, जिसे आसानी से पहना जा सकता है। दरअसल, इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानए नई दिल्ली के वार्षिक तकनीकी उत्सव एस्या 16 में हिस्सा लेने गये इन विद्यार्थियों को एक थीम पर आधारित उपकरण बनाना था। उत्सव के हैकाथलॉन इवेंट में वाईएमसीए विश्वविद्यालय की टीम स्टैक ष्वाईटर का हिस्सा रहे करन हांडा, मयंक, मोक्ष, कुशांक तथा कौशल ने नेत्रहीनों को रोजमर्रा में आने वाली दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी डिवाइस को बनाने का निर्णय लिया, जिससे नेत्रहीनों को हमेशा छड़ी पकड़कर चलने की मजबूरी से छुटकारा मिल जाये।

प्रोजेक्ट की विस्तार से जानकारी देते हुए करन हांडा ने बताया कि सबसे पहले अपनी सोच को मूर्त रूप देने के लिए उनकी टीम ने 3डी प्रिंटर तकनीक का उपयोग करते हुए स्ट्रक्चर डिजाइन किया और फिर माइक्रो कंट्रोलर और सैंसर का प्रयोग करते हुए बेल्ट पर लगने वाला एक ऐसा बक्कल बनाया, जिससे इयरफोन या हेडफोन को अटैच किया जा सकता है। इसे लगाने के बाद नेत्रहीन व्यक्ति को डिवाइस में लगे सैंसर की मदद से रास्ते में आने वाली बाधाओं की सूचना पहले ही मिल जायेगी। जैसे कि यदि रास्ते में कही सीढ़ी है या गड्ढा है तो करीब दो फुट की दूरी पर नेत्रहीन को डिवाइस में लगे सैंसर बोलकर सूचना देंगे कि आगे गड्ढा है। विद्यार्थियों ने दावा किया कि सूचना देने के लिए सैंसर की क्षमता को दूरी के हिसाब से बढ़ाया जा घटाया भी जा सकता है तथा डिवाइस को और बेहतर बनाया जा सकता है।

करन ने बताया कि डिवाइस को बनाने में उनकी टीम को करीब 16 घंटे लगे और इस पर महज 500 रुपये की लागत आई। इस प्रोजेक्ट को इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानए नई दिल्ली के वार्षिक तकनीकी उत्सव में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है, जिसके तहत विद्यार्थियों ने 15 हजार रुपये की नकद पुरस्कार राशि भी जीती।

कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से जुड़े विद्यार्थियों के लिए व्यवहारिक ज्ञान बेहद जरूरी है। तकनीकी प्रतिस्पर्धाएं तथा उत्सव विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच को सही दिशा देने के लिए बेहतरीन मंच साबित होते है और विद्यार्थियों को ऐसे अवसरों का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में भी अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे है। उन्होंने विद्यार्थियों को आश्वासन दिया कि उनकी नवीन सोच को बढ़ावा देने में विश्वविद्यालय पूरा सहयोग देगा। संकायाध्यक्ष विद्यार्थी कल्याण प्रो एस के अग्रवाल ने भी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी है।